(१) ५
२८

M-47

१४×१०

कृष्णध्यानपचीसी
(हितदामोदरकृत)
पत्र-३से ११=९
१८वींशती

पत्र १व२ अप्राप्त

र॥कृष्णध्यानधनधीरकृष्णवरनामकलपतरु॥कृष्ण
ध्यानरसपुंजकृष्णजगनामअमृतवर॥कृष्णध्या
नआनंदघनकृष्णनाममंगलभवन॥दामोदर।
हितकृष्णकौसुध्याननामसंसैदवन॥४॥दशआ
रुआठपुराणध्यानश्रीकृष्णवताये॥आगमश्रु
तिइतहाससमृतमवसंततगावे॥सुष्ठभवलभ
कृष्णध्यानसुघरासिहिविलसै॥परैकहांसंसार

नव

जहां सुष नाही तिल सो ॥ निसिदिन छिन भरि चें
नन हिमैं चक्रम जंजाल ॥ कृष्ण ध्यान हियमें धरै ना
रि भाग जौ भाल ॥ ४ ॥ सुभग सुषद श्री कृष्ण सदा ब्र
ह्मा मन ध्यावै ॥ कृष्ण ध्यान को स्वाद कहत कछु कह
त न आवै ॥ संतत सेस महेस कृष्ण ध्यान हि मन धर
ही ॥ नारद मुनि सनकादि कृष्ण रस हियमें भरिही ॥
कपिल देव श्री व्यास सुक कृष्ण ध्यान आधार ॥ ध्रुव प्र

ह्लाद अनेक जन कहां लों कहों अपार॥ ६॥ ध्यान
नन॥ कमलचरन नख कांति मनों छवि पांति वनीथ
शि॥ कमलचरण नख कांति रसिक मन माहि रहील
सि॥ कमलचरण नख कांति निगम नैंननि कों तारो॥
कमलचरण नख कांति मिटै सेवत अंधियारो॥ कमलच
रण नख जगमगै हिदा मोद रहित दुख हरण॥ कामधे
नु मनि कल्पतरु बसहि कमलपद नख धारण॥ ७॥

कृष्णचरणमनहरणकृष्णपदकरनसदासुष ॥ कृष्ण
चरणजलजातकृष्णपदतापहरणदुष ॥ कृष्णचर
नतरिभवविधिकृष्णपदअवधिसुवरफल ॥ कृष्णच
रणआधारकृष्णपदसारसकलवल ॥ कृष्णचर
णपिंकजरविजैभजौकृष्णपदनादिनर ॥ हामो
हरहितकृष्णपदसंततवरआनंदभरि ॥ ८ ॥ कृष्ण
गुलफअतिप्रभुभदसुभगसंततसुषवरषैं ॥ कृष्ण

धरैं ध्यान जे दास सदा ते उतौ हरषैं ॥ औरपरे दुषमाहि

नाहि कहूं मन थिति पावै ॥ चलि चलि जहां जहां जाहि

विपति संग ही संग धावै ॥ दामोदर हित समुझि यह कृष्ण

ध्यान हियमें धरौ ॥ सोवत अरु जागत चलत बैठें दिन

मंगल करौ ॥ ९ ॥ कृष्ण ज्ञानु कल ध्यान भान मन तिमि

रन साईं ॥ फूल्यौ संतत रहत अमल हद कमल सदाई ॥

काल कर्म हिमचंद नाहि इनको तहां उ रहै ॥ सुषसरव

ररसवारिनिरंतरताकौ भरहै॥कृष्णध्यानसबकौंसु
गमपुरुषनारिकोउ वरण॥दामोदरहितसकलके
पापतापदारुणहरण॥१०॥कृष्णध्यानसुषसदना
मदनमनतेंजुमिटावै॥कृष्णहियेमेंधरौजुदिनश्री
कृष्णजिवावै॥अतिमंजुलसुषधामकृष्णजंघा
रंभाजित॥कटिवकाछिनीरसनकृष्णअसछविवि
राषौचित॥अद्भुतसुंदरस्यामतनघनमकैंद्युतिकों त

न ॥ पीतांबर कलकत भु मैं ध्यान धरै धरि मौंन ॥ ११ ॥ क्र
धन म धानैं धीरैं क्रम नर नीर निवारण ॥ क्रम चारु चितह
रण संत मन क्रम विहारण ॥ क्रम त्रबलि रस बलित ल
लित आनंद की लहरी ॥ क्रम नाभि कमनीय सकल
सुख सरवर गहरी ॥ क्रम किशोर सु मोर निमिछिन छि
न क्रम विचार मन ॥ दामोदर हित क्रम चित क्रम सत्य
आधार जन ॥ १२ ॥ क्रम उदर उदार रोमराजी अति रा

जै ॥ लगै चित्तकी वृत्ति तहां तौ तहीं विराजै ॥ छुटै मोह छ
टै द्रोह परै रसकी धारमें ॥ कारागृह गृह भुलै फिरि न आ
वे दारामें ॥ कृष्ण ध्यान वल अमल दिन कृष्ण अचल सुष
पमें वसै ॥ दामोदर २ हित अपै नित काल व्याल न हिति
हिउसै ॥ १३ ॥ वक्षस्थल श्रीह.स ध्यान जो हियमें आवै ॥
पुलक प्रमोद सनेह दृग नितें वारि वहावै ॥ मुक्ताहार वि
हार करत उर पर अति सुंदर ॥ चंदन चित्रित चारु कृष्ण

सी ॥ कछु हि विचारि अनेक एक सीट करहै नित ॥ लगै
न हि नैरंग और कृष्ण रंग रंग्यो नवल हित ॥ को कहै ति
न हिके भाग की कृष्ण ध्याँ सों जो लग्यो ॥ दामोदर हित सक
ल जन रहे सोइ सोई जग्यो ॥ १७ ॥ कृष्ण अधर रस मधु
र अकृणता जो बिलसै बुधि ॥ नित्य मग्न आनंद औ
रु कछु नहि आवै सुधि ॥ नहीं काहू सों राग रोस नहि दोस
हि मानें ॥ को सवो ससे लगैं कृष्ण रँसिं धहि जानें ॥ इंतद स

मकश्रीकृस्नकीहासिमिलीसुधरासि ॥ सासिरासिछु
विकीछुटासुजातप्रकासिप्रकासि ॥ १८ ॥ कलकपोलश्री
मन कृस्नबोल[illegible]भावनमोहन ॥ द्रवत अमृतरसधारचि
त आहारसुसोहन ॥ सवइंद्री भई एक भाइ संगलागी
मनकें ॥ सो भयौ श्रवन सुरूप नयौ वस कृस्नवचनकें ॥
कोबोलैडोलैकहांकृस्नरूपकल्लोल ॥ अचल अनू
पमधानसुधजाकौतोलनमोल ॥ १९ ॥ कृस्ननासि

कालनितकीरजितउन्नितराजे॥कृस्नकमलदलनेंनचा
रुचितवनीविराजे॥सदाप्रसन्नमुदेसप्रेमकरुणारस
भीनें॥अमलचपलचितचोरजमलचातुरीनवी
नें॥वंकभ्रकुटिकविदेषिमिटैवंकताहीय॥कृपाककें
रेंनवरंगभरेश्रीकृस्नराधिकापीय॥२०॥नालतिल
कश्रीकृस्नभावनारहौहियेंधरि॥स्यालसतजिभ
लीभांतिभावसोंभोरविभावरि॥भूषप्याससवभ

गे भोग भवन निके भूलें ॥ भाषे भाषन औरकूलरस माते
फूलें ॥ भूरि भाग भुवलोक ते भंजन भव भय भार ॥ दामोद
र हित भूमिसुत भाजन हरन विकार ॥ २१ ॥ कुंडल कान
नि झलझल गंड मंडल प्रतिफलके ॥ निरखि निरखि हिय हर
षि दृग निते विसरे पलके ॥ होंम मदीर घर रोग सोग संताप
मिटै सब ॥ चिंता चिहुटै नाहि आस दिसि चित्त थकै तब ॥
निसिदिन रविझ विसे दिपहि सीतल [illegible] सदाप्र
॥

कामस॥ जामतिग्रह माधुर्य्यता धन्य धन्य सोदास॥ २२॥ श्रु
नगमलोंनोंमुखदसीसराजत आनंदघन॥ चूरननी
लमुकेसरहत आवेसजासुमन॥ ताकौंसमसुखदुखतु
ल्यताकौमंदिरवन॥ सीतउस्नसुभ असुभ मान अप
मानस्वपरजन॥ सवैसमानविहाननिसिसुखरसमें
घूमतसदा॥ श्रीगुरुकलमकृपाकरें उच्चदसा ऐसीतदा॥
२३॥ अतिशोभाश्रीकलममुकुटचटकैं अटकेचित॥ सुखस

१०

मूरह आनंद वृंदवरषै ताकों नित ॥ महिमा ताकी महाक
हा को उरसना बरनैं ॥ दरसन ताको करततरत भवताकी
सरनैं ॥ नषसिषछबि श्रीवल्लभकी वसत सदा जाके हि
यें ॥ दामोदर हित जगत में यस मंगल मंगल जियें ॥ २४ ॥
नषपदगुलफ सुजानु जंघ कटि त्रिवलि सुहाई ॥ नाभि
उदर उर भुजा कंठ अंश निछबि छाई ॥ चिबुक अधर र
द वचन गंड नासा दृग सोहन ॥ भृकुटि भाल श्रुति सी

सचिकुरकलमुकुटविमोहन ॥ कृष्णपचीसीध्यानकलप
टतमुनतसुखवृंद ॥ कृष्णराधिकाहियवसहि संततपरमा
नंद ॥ २५ ॥ राधाकृष्णकिशोर संग संग निकुंज विछाई ॥ रा
धाकृष्णकिशोर निरंतर रहिहि एक संग ॥ राधाकृष्णकि
शोर रंगे सानंद प्रेमरंग ॥ ललितादिक सहचरि सहित ।
कीडत वृंदावन सदन ॥ दामोदर हित चितवसो नखसिख
सुंदर विधुवदन ॥ २६ ॥ इति श्री कृष्णध्यानपचीसी संपूर्ण ॥